को; **न**=नहीं; **करिष्यसि**=करेगा; **ततः**=तो; **स्वधर्मम्**=स्वधर्म को; **कीर्तिम् च**=और यश को; **हित्वा**=खोकर; **पापम्**=पाप को ही; **अवाप्स्यसि**=प्राप्त होगा।

अनुवाद

इस पर भी यदि तू इस धर्ममय युद्ध को नहीं करेगा तो निश्चित् रूप से स्वधर्म-पालन में प्रमाद करने से होने वाले पाप को प्राप्त होगा और योद्धा के रूप में अपनी कीर्ति भी खो बैठेगा।।३३।।

तात्पर्य

अर्जुन त्रिभुवन-विख्यात योद्धा था। शिव आदि अनेक देवताओं से युद्ध कर उसने धवल कीर्ति का अर्जन किया। किरात वेषधारी शिवजी को युद्ध में परास्त कर उनसे प्रसादरूप में पाशुपतास्त्र भी वह प्राप्त कर चुका था। इन्हीं कारणों से शूरवीर के रूप में वह सर्वप्रसिद्ध हो गया। स्वयं द्रोणाचार्य ने आशीर्वाद सहित उसे वह विशिष्ट शस्त्र प्रदान किया था जिससे वह अपने गुरु तक का वध कर सकता था। इसी प्रकार पिता देवराज इन्द्र सहित अनेक शूरवीरों से उसे युद्ध-कौशल के विपुल प्रशस्ति-पत्र प्राप्त थे। इस स्थिति में यदि वह युद्धभूमि का परित्याग करता है, तो कर्तव्य न करने से प्रमाद का ही दोषी नहीं होगा, वरन् उसके यश की भी हानि होगी, जिससे नरक का राजपथ प्रशस्त हो जायगा। प्रकारान्तर से, उसे नरक की प्राप्ति युद्ध करने से नहीं, अपितु युद्धभूमि से पलायन करने से होगी।

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।।३४।।

9.2

अकीर्तिम् च अपि=अपयश को भी; **भूतानि**=लोग; **कथयिष्यन्ति**=कहेंगे; **ते**=तेरे; **अव्ययाम**=सदा; **संभावितस्य**=सम्मान्य पुरुष के लिए; **च**=तथा; **अकीर्तिः**=अपयश; **मरणात्**=मरने से भी; **अतिरिच्यते**=मन्द होती है।

अनुवाद

सब लोग भी सदा तेरे अपयश का कथन करेंगे। सम्मान्य व्यक्ति के लिए तो अपकीर्ति मृत्यु से भी अधिक मन्द होती है।।३४।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण ने सखा और गुरु, दोनों रूप से इस श्लोक में अर्जुन के युद्ध से विमुख हो जाने पर अपना अन्तिम निर्णय दिया है। वे कहते हैं: 'हे अर्जुन! यदि तू युद्धभूमि से उपरत हो जायगा तो तेरे वास्तविक पलायन करने से पूर्व ही लोग तुझे भीरु कहने लगेंगे। यदि तू यह समझता है कि लोगों के अपशब्द सुनने पर भी युद्ध से पलायन करके तू कम से कम अपनी जीवन-रक्षा तो कर ही लेगा, तो मेरा परामर्श है कि तेरे लिये युद्ध में मरना अपेक्षाकृत अधिक श्रेयस्कर होगा। तेरे समान गणमान्य पुरुष के लिये अपयश तो मृत्यु से भी अधिक मन्द होता है। अतः प्राणभय से पलायन करना तेरे योग्य नहीं। वरन् युद्ध में वीरगति प्राप्त करना ही श्रेयस्कर है।